हिंदी और बांग्ला के नदी केंद्रित उपन्यासों का तुलनात्मक विवेचन
(‘वरुण के बेटे’ और ‘तितास एक नदी का नाम’ के विशेष संदर्भ में)

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, कोलकाता के
एम. फिल. हिंदी तुलनात्मक साहित्य उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध
सत्र

2014 - 2015

शोधार्थी
अम्बरीन अरशद
पंजी. सं.- 2014/02/205/029

ज्ञान शांति मैत्री

क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
क्षेत्रीय केंद्र, ऐकतान, आईए-290, सेक्टर-3, साल्ट लेक, कोलकाता-97, भारत

विषयानुक्रमणिका

आभार

भूमिका

प्रथम अध्याय: **10 - 27**

नदी केंद्रित उपन्यासों का इतिहास

1.1 नदी केंद्रित उपन्यासों का एक परिचय

1.2 नागार्जुन और अद्वैत मल्लबर्मन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

द्वितीय अध्याय: **29 - 39**

'वरुण के बेटे' में मछुआरों के जीवन संघर्ष के मार्मिक प्रसंग

तृतीय अध्याय: **41 - 66**

'तितास एक नदी का नाम ' में मछुआरों के जीवन संघर्ष के मार्मिक प्रसंग

चतुर्थ अध्याय: **68 – 72**

'वरुण के बेटे' और 'तितास एक नदी का नाम' में हाशिय का समाज

पंचम अध्याय: **74 - 116**

'वरुण के बेटे' और 'तितास एक नदी का नाम' का तुलनात्मक वस्तुगत एवं शिल्पगत विवेचन

5.1 'वरुण के बेटे का वस्तुगत विवेचन

5.2 'तितास एक नदी का नाम   का वस्तुगत विवेचन

5.3 'वरुण के बेटे' और 'तितास एक नदी का नाम' उपन्यासों में स्त्री पात्रों का संघर्ष

5.4 प्राकृतिक वातावरण

5.5 शिल्प-विधि

5.6 लोक गीत

उपसंहार: **117 - 118**

सहायक ग्रंथ: **119 - 120**

भूमिका

भारतवर्ष में अंतर प्रादेशिक साहित्य के लेने-देने का इतिहास अत्यंत कौतुहल जगाने वाला है| कोई भी प्रादेशिक साहित्य केवल एक विशेष प्रदेश एवं विशेष काल का ही साहित्य नहीं होता अपितु स्थान, काल एवं पात्रों के विभेद को भुलाकर ही हम उस साहित्य के साथ एकात्म हो पाते हैं| विश्व के जितने भी श्रेष्ठ साहित्य हैं उनमें विश्व के विभिन्न प्रदेशों के साहित्य के तत्वों की उपस्थिति पाई जाती है, यह फिर ऐसा कह सकते हैं कि विश्व के विभिन्न साहित्य में उनकी अंतिम रागनिका का अलाप सुनाई देता है| अत:किसी एक प्रदेश के साहित्य को जानने के लिए यह आवश्यक है कि उससे जुड़े हुए किसी दूसरे प्रदेश और भाषा के साहित्य का भी अध्ययन किया जाए| उदाहरण के लिए उपनिषद, संस्कृत, काव्य साहित्य, बौद्ध, पाली साहित्य, हिंदी साहित्य और बांग्ला का बाउल संगीत, वैष्णव पदावली तथा पश्चिमी रोमांटिक काव्य साहित्य के साथ परिचित न होने पर जिस प्रकार बांग्ला के रवीन्द्र साहित्य को नहीं समझा जा सकता उसी प्रकार बांग्ला साहित्य से परिचित न होने पर आधुनिक हिंदी साहित्य की गति प्रकृति को समझ पाना भी एक प्रकार से असम्भव है|

यधपि आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समय से ही बांग्ला साहित्य का हिंदी में एवं स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य का बांग्ला में अनुवाद कार्य तो होता आ रहा है| परन्तु आज भी तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन विशेष परिश्रम की मांग करता है| इसलिए अब तक इन दोनों भाषाओं के बीच तुलनात्मक साहित्य की अपरिहार्यता बनी हुई है| मेरा यह लघु शोध इस कमी को पूरा करने की एक महत्वपूर्ण कड़ी है|

मानव जीवन के विकास में प्राचीन काल से ही साहित्य की भूमिका अविस्मरणीय रही है साथ ही नदियाँ साहित्यकारों को कृति की रचना के लिए विषय प्रदान करती आयी हैं | नदियों का सम्बन्ध मानव जीवन के इतिहास में आज भी देखा जा रहा है विशेषकर 'वरुण के बेटे' और 'तितास एक नदी का नाम' के उपन्यासकारों ने मछुआरों और नदी के सहसंबंधों को उनके जीवन के विकास को क्रमबद्ध तरीके से अंकित किया है | इन उपन्यासों में उपन्यासकारों ने मछुआरों की पूरी जीवन

शैली, दिनचर्या और ग्रामीण परीवेश, उसकी पृष्ठभूमि के बनने और बिगड़ने की पूरी रूप रेखा से अवगत कराया है | दोनों उपन्यास मानव जीवन की अनेक छवियों के बारे में मात्र सूचना ही नहीं देते हैं बल्कि उनके जीवन यथार्थ का चित्रण भी करते हैं | साहित्य की उपन्यास विधा मानव समाज का एक बड़ा साथी है | इस आधार पर ये दोनों उपन्यास पिछड़े और दलित मानव समाज के उन अनछुए पहलुओं और बिन्दुओं के बारे में विस्तार से बताते हुए पश्चिम बांग्लादेश और पूर्वी बिहार का चित्रण करते हैं |

इस शोध में इन दोनों उपन्यासों के तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से हिंदी और बांग्ला समाज की एक वर्ग विशेष की संस्कृति के प्रमुख भेदों और उनकी समानताओं की जानकारी प्राप्त होगी जिसके माध्यम से दोनों भाषायी समाजों को समृद्ध किया जा सकता है| इस अध्ययन के माध्यम से एवं उसके अंतरानुशासनिक अध्ययन की पद्धति के माध्यम से भारत के एक क्षेत्र को दूसरी मुख्य धारा के क्षेत्रों से मिलाने की एक कोशिश हो सकती है|